भगवान् शिव की पूजा

भगवान् शिव की पूजा से व्यक्ति को योग, ज्ञान, यश आदि की प्राप्ति होती है (**'योगो ज्ञानं यशः सिद्धिर्महादेवादवाप्यते।'** वीरमित्रोदयः पूजाप्रकाशः पृ. 5)। भगवान् शिव की पूजा प्रणव (ॐकार), रुद्रगायत्री, ईशान आदि पाँच मन्त्रों, त्र्यम्बकमन्त्र या पंचाक्षरमन्त्र अथवा किसी भी नाममन्त्र से की जा सकती है। कहा गया है कि-

पञ्चाक्षरेण मन्त्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
यः प्रयच्छति शर्वाय तदनन्तफलं स्मृतम्।।

अर्थात्-पंचाक्षरमन्त्र द्वारा भगवान् शिव को पत्र, पुष्प, फल और जल समर्पित करनेवाला अनन्त फल को प्राप्त करता है।

अगर लिंगरूप में भगवान् शिव की पूजा की जाती है तो उसका महान् फल होता है (**'शिवपूजा लिङ्गे महाफला'** वीरमित्रोदयः पू. प्र. पृ. 9)। लिंग दो तरह का होता है- पार्थिव एवं स्थापित। लिंगपूजा की महिमा का गान अनेक ग्रन्थों ने किया है। लिंगपूजा की विशेषताओं से संबंधित कुछ शास्त्रीय वचनों का उल्लेख इस प्रकार है।

लिङ्गे देवो महादेवः सर्वदेवनमस्कृतः।
अनुग्रहाय लोकानां तस्मान्नित्यं प्रपूजयेत्।।
यो न पूजयते भक्त्या लिङ्गं त्रिभुवनेश्वरम्।
न स स्वर्गस्य लोकस्य मोक्षस्य न च भाजनम्।।
यस्तु पूजयते नित्यं शिवं त्रिभुवनेश्वरम्।
स स्वर्गराज्यमोक्षाणां क्षिप्रं भवति भाजनम्।।
वरं प्राणपरित्यागः शिरसो वापि कर्त्तनम्।
न त्वसम्पूज्य भुञ्जीत भगवन्तं त्रिलोचनम्।।
न हि लिङ्गार्चनात् किञ्चित् पुण्यमभ्यधिकं क्वचित।
इति विज्ञाय यत्नेन पूजनीयः सदा शिवः।।
लिङ्गे तु पूजिते सर्वमर्चितं स्याच्चराचरम्।
तस्मात्सदार्चनं कार्यं लिङ्गस्य सुमहात्मनः।।

(वी. मि. पू. प्र. पृ. 196-197 में भविष्यपुराण एवं लिंगपुराण का वचन)

ऊपर के श्लोकों का भावार्थ यह है कि लिंग में सभी देवों का निवास होने से लिंग को नमस्कार करने से सभी देवों को नमस्कार कर लिया जाता है। जो लोग भक्तिपूर्वक भगवान् शिव के लिंग की पूजा नहीं करते उन्हें न तो स्वर्ग और न ही मोक्ष प्राप्त होता है। जो लोग नित्य

शिवजी की पूजा करते हैं उन्हें शीघ्र ही स्वर्ग एवं मोक्ष प्राप्त हो जाता है। बिना शिव की पूजा के भोजन ग्रहण करने की अपेक्षा प्राण का त्याग कर देना श्रेष्ठ है। लिंगार्चन से अधिक पुण्य कुछ भी नहीं है–ऐसा समझकर यत्नपूर्वक सदाशिव की पूजा करनी चाहिये। लिंगार्चन से समस्त चराचर की पूजा हो जाती है। इसलिये सत्पुरुषों को सदा लिंगार्चन करना चाहिये। शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि–

मनसा चिन्तयेद्यस्तु पूजयामि हरं पदम्।
अशक्तौ नास्ति चेद्द्रव्यं यस्य चापि सुमध्यमे।।
स तया श्रद्धया पूतो विमुक्तः सर्वपातकैः।
मम लोकमवाप्नोति भिन्नदेहो न संशयः।। (वी. मि. पू. प्र. पृ. 197)

अर्थात्– रोगादि के कारण अशक्त होने की स्थिति में अथवा गरीबी आदि के कारण द्रव्यों के अभाव में जो व्यक्ति भगवान् शिव की मानसिक रूप से पूजा करता है वह भी सभी पापों से मुक्त होकर शिवलोक को प्राप्त करता है।

जो व्यक्ति भगवान् शिव की भक्ति में तत्पर होकर प्रतिदिन लिङ्ग का पूजन करता है उसके सुमेरुतुल्य बड़े से बड़े पापों के समुदाय नष्ट हो जाते हैं।

यो लिङ्गं पूजयेन्नित्यं शिवभक्ति परायणः।
मेरुतुल्योपि तस्याशु पापराशिलयं व्रजेत।। (मन्त्रमहोदधिः 19/107)

भगवान् शिव की पूजा में चारों वर्णों का अधिकार है। पार्थिवलिंग की पूजा के बारे में कहा गया है कि इसे स्त्री एवं शूद्र सभी स्वयं कर सकते हैं(**'स्त्रीशूद्रैश्च प्रकर्तव्यं पार्थिवे तु शिवेऽर्चनम्'**)।(वी. मि. पू. प्र. पृ. 201)

यस्तु पूजयते लिङ्गं देवादिं मां जगत्पतिम्।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा मत्परायणः।
तस्य प्रीतः प्रदास्यामि शुभाँल्लोकाननुत्तमाम्।। (निर्णयसिन्धुः पृ. 674)

उपर्युक्त श्लोक का भावार्थ यह है कि जगत्पति महादेवजी के लिंग की पूजा भक्तिपरायण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वा शूद्र जो कोई भी करता है उसे भगवान् शिव उत्तम लोक प्रदान करते हैं।

शास्त्रों में पूजा के पाँच प्रकार बताये गये हैं– अभिगमन, उपादान, योग, स्वाध्याय और इज्या। देवता के स्थान को साफ करना, लीपना, झाड़ू–पोछा लगाना तथा निर्माल्य हटाना– ये सब 'अभिगमन' के अन्तर्गत हैं। गंध, पुष्प आदि पूजा–सामग्री का संग्रह 'उपादान' कहलाता है। इष्टदेव की आत्मरूप से भावना करना 'योग' है। मन्त्रार्थ का अनुसंधान करते हुए जप करना,

सूक्त, स्तोत्र आदि का पाठ करना, गुण, नाम, लीला आदि का कीर्त्तन करना और वेद-शास्त्रादि का अभ्यास करना – ये सब 'स्वाध्याय' हैं। उपचारों के द्वारा अपने आराध्यदेव की पूजा 'इज्या' कही गयी है। ये पाँच प्रकार की पूजाएँ क्रमशः सार्ष्टि, सामीप्य, सालोक्य, सायुज्य और सारूप्य-मुक्ति देनेवाली हैं। इज्या के अन्तर्गत अभिगमन, उपादान एवं स्वाध्याय के अंश भी सम्मिलित हैं क्योंकि बिना देवप्रतिमा की सफाई किये एवं निर्माल्य हटाये इज्या नहीं हो सकती। इसी प्रकार बिना पूजा-सामग्री जुटाये तथा जप एवं स्तोत्र के भी इज्या नहीं हो सकती। अतः इज्या के महत्त्व को देखते हुए यहाँ पर उपचारों द्वारा की जानेवाली शिवपूजा की चर्चा की जायगी। इस अध्याय से संबंधित कई मुख्य बातों की जानकारी के लिये पाठक को पहले 'देवपूजा-प्रकरण (पूजासंबंधी जानने योग्य कुछ बातें)', 'सेवापराध एवं नामापराध', 'व्रत, उपवास एवं धर्मसंबंधी कुछ उपयोगी बातें', 'न्यास-स्वरूप एवं प्रयोग', 'भूत-शुद्धि', 'स्व की प्राणप्रतिष्ठा' तथा 'श्रीकण्ठादि कलान्यास' के अध्यायों को पढ़ना चाहिये। फिर भी शिव-पूजन की कुछ मुख्य बातों की यहाँ संक्षिप्त रूप से पुनरावृत्ति की जा रही है।

शिवपूजा की मुख्य बातें

किसी भी देव-पूजन में मनुष्य को स्नान आदि से शुद्ध तो होना ही पड़ता है, यदि सम्भव हो और कठिनाई न हो तो पूजा करनेवाले को सिले हुए वस्त्र नहीं पहनना चाहिये। आसन शुद्ध होना चाहिये। पूजा के समय पूर्व या उत्तरमुख बैठना चाहिये। पूजा के प्रारंभ में उपयुक्त संकल्प किया जाना चाहिये। शिव-पूजन के लिये निम्न बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये–

(1) भस्म, त्रिपुण्ड्र[1] और रुद्राक्षमाला– ये शिव-पूजन के लिये विशेष सामग्री हैं जो पूजक के शरीर पर होनी चाहिये। अर्थात् शिवजी की पूजा त्रिपुण्ड्र, भस्म एवं रुद्राक्ष की माला धारणकर करनी चाहिये।

विना भस्मत्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया।
पूजितोऽपि महादेवो न तस्य फलदो भवेत्।। (आचारेन्दुः पृ. 192)
विनाभस्मत्रिपुड्रेणविनारुद्राक्षमालया।
बिल्वपत्रंविनानैवपूजयेच्छंकरं बुधः।। (शिवपुराण विद्येश्वरसंहिता 21/55)

अर्थात्- बिना भस्म, त्रिपुण्ड्र, रुद्राक्षमाला तथा बिल्वपत्र के भगवान् शिव की पूजा नहीं करनी चाहिये क्योंकि इन सबके बिना वह फलवती नहीं होगी।

किसी यज्ञकुण्ड से ली गयी भस्म का त्रिपुण्ड्र उत्तम माना जाता है। अग्निहोत्र से ली गयी

1. भस्म-त्रिपुण्ड्र लगाने की विधि के लिये इस पुस्तक के प्रथम भाग में 'शिवमहापुराण में शिवतत्त्व एवं उसकी उपासना' नामक शीर्षकवाले लेख को देखें। इसके अतिरिक्त इस भाग में भी इसकी संक्षिप्त चर्चा यथास्थान मिलेगी।

भस्म भी श्रेष्ठ है। किसी भी साधु की धूनी से ली गयी भस्म उपयोग में आ सकती है। यदि इनमें से कोई भी भस्म न मिल सके तो बिना व्यायी गाय के सूखे गोबर को जलाकर उसके भस्म को काम में लेना चाहिये।

पीपल की छाल को जलाकर उसके भस्म को गाय के दूध में सानकर पिण्डाकार बनाने के पश्चात् पुनः जलाया जाता है। फिर यह क्रिया कुछ अधिक बार दुहराई जाती है। इस प्रकार यह भस्म बहुत कोमल हो जाती है। नाथ-सम्प्रदाय में इस भस्म को शरीर में लगाने की बहुत प्रथा है।

(2) भगवान् शंकर की पूजा में तिल का प्रयोग नहीं होता और किसी भी चम्पा या केतकी आदि का पुष्प नहीं चढ़ाया जाता।

(3) शिव की पूजा में भी दूर्वा एवं तुलसी-दल चढ़ाया जाता है- इसमें सन्देह नहीं किया जाना चाहिये। अवश्य ही तुलसी की मंजरियों से पूजा अधिक श्रेष्ठ मानी जाती है।

(4) शंकरजी के लिये विशेष पुष्प और पत्र में बिल्व-पत्र प्रधान है, किन्तु बिल्व-पत्र में चक्र और वज्र नहीं होना चाहिये। बिल्व-पत्र में कीड़ों के द्वारा बनाया हुआ जो सफेद चिन्ह होता है उसे चक्र कहते हैं और बिल्व-पत्र के डण्ठल की ओर जो थोड़ा सा मोटा भाग होता है वह वज्र कहा जाता है। वह भाग तोड़ देना चाहिये। कीड़ों से खाया हुआ तथा कटा-फटा बिल्व-पत्र भी शिव-पूजा के योग्य नहीं होता। आक का फूल और धतूरे का फल भी शिव-पूजा की विशेष समग्री हैं, किन्तु सर्वश्रेष्ठ पुष्प है नीलकमल का। उसके अभाव में कोई भी कमल का पुष्प भगवान् शंकर को बहुत प्रिय है। कुमुदिनी-पुष्प अथवा कमलिनी-पुष्प का प्रयोग भी शिव-पूजा में होता है। बिल्व-पत्र चढ़ाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि बिल्व-पत्र का चिकना भाग लिंग-मूर्ति की ओर रहे।

(5) तीन से लेकर ग्यारह दलोंतक के बिल्व-पत्र प्राप्त होते हैं। ये जितने अधिक पत्रों के हों, उतना ही उत्तम माना जाता है, किन्तु यदि तीन में से कोई दल टूट गया हो तो वह बिल्व-पत्र चढ़ाने योग्य नहीं है।

(6) तुलसी और बिल्व-पत्र सर्वदा शुद्ध माने जाते हैं। ये बासी नहीं होते। कुन्द, तमाल, आँवला, कमल-पुष्प, अगस्त्य-पुष्प- ये भी पहले दिन तोड़कर लाये हुए दूसरे दिन उपयोग में आते हैं। एक दिन में इनको बासी नहीं माना जाता।

(7) भगवान् शंकर के पूजन के समय झल्लक या करताल नहीं बजाया जाता।

(8) शिव की परिक्रमा में सम्पूर्ण परिक्रमा नहीं की जाती। जिधर से चढ़ा हुआ जल निकलता है उस नाली का उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिये। वहाँ से प्रदक्षिणा उल्टी की जाती है। परन्तु अगर नाली ढकी हो तो उसका उल्लंघन हो सकता है। और उस स्थिति में तीन परिक्रमा करनी चाहिये।

(9) शिवालय या किसी भी देवालय में(व्यक्तिगत अथवा सामूहिक) पूजा के दौरान एकमात्र गुरु के किसी अन्य को नमस्कार, प्रणाम अथवा अभिवादन नहीं करना चाहिये।

(10) स्त्रियों को देवमूर्ति अथवा गुरुजनों को साष्टांग प्रणाम न करके पंचांग प्रणाम(जिसमें वक्ष एवं उदर आदि अंग धरती को स्पर्श नहीं करते) ही करना चाहिये।

(11) शिव-पूजा में मुख्यतया पञ्चाक्षरमन्त्र का प्रयोग किया जाता है। अगर पूजा के उपचारों के मन्त्र याद नहीं हों तो उसकी जगह पंचाक्षरमन्त्र का प्रयोग हो सकता है।

(12) लिंग पर चढ़ाने के लिये ले जानेवाला जल शुद्ध एवं साफ हो तथा जिस पात्र में उसे ले जाया जा रहा हो या जिस पात्र से जल चढ़ाया जा रहा हो उसे नीचे से पकड़ना चाहिये। अर्थात् हथेली पर पात्र को रखकर ही जल ले जाना तथा चढ़ाना चाहिये। पात्र को ऊपर से अँगुलियों के सहारे से नहीं पकड़ना चाहिये।

(13) प्रतिष्ठित लिंग पर जल मध्याह्न की पूजा से पहलेतक ही चढ़ाना चाहिये, उसके बाद नहीं। परन्तु श्रावण के महीने में अथवा शिवरात्रि के दिन 24 घंटे में कभी भी जल चढ़ा सकते हैं।

(14) लिंग के स्नान, धूप, दीप, आभूषण, नैवेद्यअर्पण और नीराजन के समय अन्य उपयुक्त वाद्यों के साथ घण्टानाद अवश्य करना चाहिये।

स्नाने धूपे तथा दीपे नैवेद्ये भूषणे तथा।
घण्टानादं प्रकुर्वीत तथा नीराजनेऽपि च।।

(धर्मसिन्धुः पृ. 576 की पादटिप्पणी देखें)

(15) मंदिर या पूजास्थल में व्यक्ति को पूजा-आरती के समय खड़े हो हाथ जोड़कर पूजा में शामिल होना चाहिये। किसी कारण से खड़े न रह सकने की स्थिति में पूजा-स्थल से अथवा देवमूर्ति से ओझल हो दूर से ही पूजा-आरती के स्वर सुनता रहे।

(16) शिवपूजा में सूतक एवं पातक का दोष नहीं होता जबकि विष्णु आदि देवों की पूजा में यह दोष होता है। (आचारेन्दुः पृ. 235)

सूतके मरणे चैव न दोषः परिकीर्तितः। (आचारेन्दुः पृ. 235)

(17) पूजा, जप अथवा होम के निमित्त हाथ में फूल, फल, जल, समिधा, कुशादि लेकर जाते समय व्यक्ति स्वयं किसी को न तो प्रणाम करे न हि किसी को आशीर्वाद दे क्योंकि ऐसा करने से उपर्युक्त सभी वस्तुयें उन दोनों का निर्माल्य हो जाती हैं। परंतु आध्यात्मिक गुरु इस नियम का अपवाद है। क्योंकि जिस प्रकार मन्त्र को शब्दों का समूह तथा देवता को पत्थर आदि की प्रतिमा नहीं माना जाता, उसी प्रकार गुरु को भी शरीरधारी मनुष्य नहीं माना जाता; वरन् उसे

आदि गुरु शिव का ही रूप माना जाता है।(धर्मसिन्धुः पृ. 660 तथा आचारेन्दुः पृ. 164)

(18) मन्दिर में चमड़े की सामग्री जैसे बेल्ट, पर्स, थैला या कोई पात्र आदि नहीं ले जाना चाहिये। परन्तु चमड़े के वाद्ययन्त्र जैसे ढोलक, मृदंग, नगाड़ा, डमरू आदि को ले जाया जा सकता है।

(19) शराब आदि निषिद्ध मादक द्रव्यों का सेवन कर नशे की स्थिति में व्यक्ति को मंदिर में न तो प्रवेश करना चाहिये और न ही पूजा करनी चाहिये।(वीरमि. पू. प्र. पृ. 184)

शिव–पूजन की संक्षिप्त वैदिक विधि

भगवान् शंकर की पूजा के समय शुद्ध आसन पर बैठकर पहले आचमन, पवित्री–धारण, शरीर–शुद्धि और आसन–शुद्धि कर लेनी चाहिये। तत्पश्चात् पूजन–सामग्री को यथास्थान रखकर रक्षादीप प्रज्वलित कर लें, तदनन्तर स्वस्ति–पाठ करें। इसके बाद पूजन का संकल्प कर तदङ्गभूत भगवान् गणेश एवं भगवती गौरी का स्मरणपूर्वक पूजन करना चाहिये। यदि वेद के मन्त्र अभ्यस्त न हों तो आगमोक्त मन्त्र से, यदि वे भी अभ्यस्त न हों तो नाममन्त्र से और वह भी सम्भव न हो तो मानसिक भावना कर बिना मन्त्र के ही पाद्य, अर्घ्यादि चढ़ाकर पूजा करनी चाहिये। द्विजों(अर्थात् तीन वर्णों) को वैदिक मन्त्रों से पूजा करने का अधिकार है। अनुपवीती, स्त्री तथा शूद्र को पौराणिक या आगमिक मन्त्र से पूजा करनी चाहिये। यहाँ पर वैदिक मन्त्रों से की जानेवाली पूजा का वर्णन किया जा रहा है। आगे आगमिक मन्त्रों से की जानेवाली पूजा का वर्णन किया जायगा। रुद्राभिषेक, लघुरुद्र, महारुद्र तथा सहस्रार्चन आदि विशेष अनुष्ठानों में नवग्रह, कलश, षोडशमातृका आदि का भी पूजन करना चाहिये। यदि ब्राह्मणों द्वारा पूजा अथवा अभिषेक–कर्म सम्पन्न हो रहा हो तो पहले उनका पादप्रक्षालनपूर्वक अर्घ्य, चन्दन, पुष्पमाला आदि से अर्चन करें, फिर वरणीय सामग्री हाथ में ग्रहण कर संकल्पपूर्वक उनका वरण करें।

वरण का संकल्पः – ॐ अद्य... मम... रुद्राभिषेकाख्ये(अथवा पूजा) **कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकामुक गोत्रोत्पन्नान् अमुकामुकनाम्नो ब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।**

तदनन्तर ब्राह्मण बोलें – **'वृताः स्मः'।** तदनन्तर ब्राह्मण संकल्प पूर्वक यथाविधि स्वस्तिवाचन एवं गणपति और गौरी का पूजन करें।

अगर स्वयं पूजन करना हो तो पहले पूजन का संकल्प लें।

पूजन का संकल्प(सकाम)– दाहिने हाथ में तीन कुशा, पुष्प, अक्षत, जल तथा द्रव्य रखकर इस प्रकार संकल्प करें –

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, अद्य.....मम सर्वारिष्टनिरसनपूर्वक सर्वपापक्षयार्थं मनसेप्सितफलप्राप्तिपूर्वकश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं भगवतः श्रीसाम्बसदाशिवस्य पूजनमहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन कार्यस्य निर्विघ्नतया सिद्ध्यर्थं आदौ गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

निष्काम संकल्प – ॐविष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, अद्य.....श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं श्रीभगवत्साम्बसदाशिवपूजनमहं करिष्ये। इसके आगे का संकल्प वाक्य पहले जैसा ही है। अब गणेश का स्मरण इस प्रकार करें–

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।।
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

तदनन्तर गौरी का स्मरण इस प्रकार करें –

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।

उपलब्ध विविध उपचारों से गणपति – गौरीपूजन के उपरान्त भगवान् शंकर की पूजा में उनके विशिष्ट अनुग्रह की प्राप्ति के लिये उनके परिकर – परिच्छद एवं पार्षदों का भी पूजन किया जाता है। संक्षेप में उनके पूजा – प्रार्थना – मन्त्र भी यहाँ दिये जा रहे हैं।

नन्दीश्वर – पूजन

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें–

ॐ प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा।
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा।।

वीरभद्र – पूजन

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें–

ॐ भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः।।

कार्तिकेय – पूजन

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव।
तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु।।

कुबेर – पूजन

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें -

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

कीर्तिमुख – पूजन

ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा।।

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें-

ॐ ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

सर्प – पूजन

जलहरी में सर्प का आकार हो तो सर्प का पूजन कर पश्चात् शिव-पूजन करें।

शिव – पूजन

पार्षदों की पूजा के बाद हाथ में बिल्वपत्र और अक्षत लेकर भगवान् शिव का ध्यान करें[1]।

ध्यान – ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं

---

1. प्रतिष्ठित शिवमूर्ति, ज्योतिर्लिङ्ग, स्वयम्भूलिङ्ग तथा नर्मदेश्वरलिङ्गादि में आवाहन एवं विसर्जन के बगैर ही पूजा की जाती है।

विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।[1]

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, ध्यानार्थे बिल्वपत्रं समर्पयामि। (ध्यान करके शिव पर बिल्वपत्र चढ़ा दें।)

आसन – **ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।**
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, आसनार्थे बिल्वपत्राणि समर्पयामि।
(आसन के लिये बिल्वपत्र चढ़ायें उसके अभाव में पुष्प प्रयोग करें।)

पाद्य – **ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।**
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि꣡ꣳ सीः पुरुषं जगत्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (पाद्य के निमित्त जल चढ़ायें।)

अर्घ्य – **ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।**
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म꣡ꣳ सुमना असत्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।
(अर्घ्य समर्पित करें।)*

आचमन – **ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।**
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (सुवासित जल चढ़ायें।)*

स्नान – **ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।**
ये चैन꣡ꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा꣡ꣳ हेड ईमहे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।
स्नानान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि।।
(स्नानीय और आचमनीय जल चढ़ायें।)*

---

1. **'ध्यायेन्नित्यं ..... से पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्'** तक पौराणिक मन्त्र है। वैदिक ध्यानमन्त्र के साथ इसका प्रयोग आवश्यक नहीं है।

* अर्घ्य एवं आचमन आदि के द्रव्यों की जानकारी के लिये 'देवपूजा-प्रकरण' वाला लेख पढ़ें।

पयः स्नान – **ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।**
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, पयः स्नानं समर्पयामि, पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(दूध से स्नान करायें, पुनः शुद्ध जल से स्नान करायें और आचमन के लिये जल चढ़ायें।)

दधिस्नान – **ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।**
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूꣳ षि तारिषत्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, दधिस्नानं समर्पयामि, दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(दही से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान करायें तथा आचमन के लिये जल समर्पित करें।)

घृतस्नान – **ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।**
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, घृतस्नानं समर्पयामि, घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(घृत से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान करायें ओर पुनः आचमन के लिये जल चढ़ायें।)

मधुस्नान – **ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।**
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ2 अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, मधुस्नानं समर्पयामि, मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(मधु से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान करायें तथा आचमन के लिये जल समर्पित करें।)

शर्करास्नान – **ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम्।**
अपाꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि,

शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(शर्करा से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान करायें तथा आचमन के लिये जल चढ़ायें।)

पञ्चामृतस्नान– **ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।**
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः,
पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि, पञ्चामृतस्नानन्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि,
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(पञ्चामृत* से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान करायें तथा आचमन के लिये जल चढ़ायें।)

गन्धोदकस्नान– **ॐ अꣳ शुना ते अꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।**
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, गन्धोदकस्नानं
समर्पयामि, गन्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(गन्धोदक* से स्नान कराकर आचमन के लिये जल चढ़ायें।)

शुद्धोदकस्नान– **ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः**
श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः
पार्जन्या।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

(शुद्ध जल से स्नान करायें।)

आचमनीय जल– **ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।**
अहीँश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं
समर्पयामि। (आचमन के लिये जल चढ़ायें)

अभिषेक

शुद्ध जल, गङ्गाजल अथवा दुग्धादि से निम्न मन्त्रों का पाठ करते हुए शिवलिंग का अभिषेक करें -

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।
या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।।

---

* पंचामृत एवं गन्धोदक के लिये 'देवपूजा-प्रकरण' वाला लेख देखें।

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि꣡ꣳ सीः पुरुषं जगत्।।
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्षम꣡ꣳ सुमना असत्।।
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।।
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैन꣡ꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा꣡ꣳ हेड ईमहे।।
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।।
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः।।
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप।।
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ2 उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज।।
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्।।
अवतत्य धनुष्ट्व꣡ꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।।
नमस्त आयुधायानाततायै धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।।
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः।।
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।।

अभिषेक के अनन्तर शुद्धोदक – स्नान करायें। तत्पश्चात् '**ॐ द्यौः शान्तिः**' इत्यादि शान्तिक मन्त्रों का पाठ करते हुए शान्त्यभिषेक करना चाहिये। तदनन्तर भगवान् को आचमन कराकर उत्तराङ्ग – पूजन करें।

वस्त्र – **ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।**
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि,
वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(वस्त्र चढ़ायें तथा आचमन के लिये जल चढ़ायें।)

यज्ञोपवीत – **ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।**
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, यज्ञोपवीतं
समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(यज्ञोपवीत समर्पित करें तथा आचमन के लिये जल चढ़ायें।)

उपवस्त्र – **ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।**
वासो अग्ने विश्वरूप ꣳ सं व्ययस्व विभावसो।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि,
उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(उपवस्त्र चढ़ायें तथा आचमन के लिये जल दें।)

गन्ध – **ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।**
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, गन्धानुलेपनं
समर्पयामि। (चन्दन[1] उपलेपित करें।)

सुगन्धित द्रव्य – **ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, सुगन्धिद्रव्यं
समर्पयामि। (सुगन्धित द्रव्य चढ़ायें।)

अक्षत – **ॐ व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे**
खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे
नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।
ॐ भूर्भुव स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।
(कुंकुमयुक्त अक्षत[2] चढ़ायें।)

---

1. गन्धद्रव्यों के लिये – 'देवपूजा–प्रकरण' वाला लेख देखें।

2. बिना टूटे हुए 7 बार धोये चावल को अक्षत कहते हैं। इसके बारे में भी अधिक जानकारी के लिए उपर्युक्त लेख देखें।

पुष्पमाला – **ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ2 उत।**
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।
(पुष्पमाला[1] चढ़ायें।)

बिल्वपत्र – **ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च**
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (बिल्वपत्र[2] समर्पित करें।)

नानापरिमलद्रव्य – **ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।**
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाꣳ सं परि पातु विश्वतः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि। (विविध परिमलद्रव्य चढ़ायें।)

(भगवान् के आगे चौकोर जल का घेरा डालकर उसमें नैवेद्यादि वस्तुओं को रखें, इसके बाद धूप-दीप निवेदन करें।)

धूप – **ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।**
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।
(धूप* दिखायें।)

दीप – **ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः।**
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि।
(दीप* दिखलायें और हाथ धो लें।)

नैवेद्य – **ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे।**
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।
नैवेद्यान्ते ध्यानम्, ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(नैवेद्य* निवेदित करें, तदनन्तर भगवान् का ध्यान करके आचमन के लिये जल चढ़ायें।)

---

1. और 2. कौन से पुष्प-पत्र चढ़ाना चाहिये कौन सा नहीं इत्यादि की जानकारी तथा बिल्वपत्र संबंधी जानकारी के लिये उपर्युक्त लेख पढ़े।

* धूप, दीप एवं नैवेद्य समर्पण के बारे में विस्तृत जानकारी के लिये 'देवपूजा-प्रकरण' नामक लेख देखें।

आचमनीय – **आचमनीयम् उत्तरापोऽशंन मुखप्रक्षालनार्थं हस्तप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि।** (हाथ एवं मुख प्रक्षालनार्थ जल चढ़ायें।)

ऋतुफल – **ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।**
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।
(ऋतुफल* समर्पित करें।)

करोद्वर्तन – **ॐ सिञ्चति परि षिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च।**
सुरायै बभ्रूवै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दन का अनुलेपन करें।)

ताम्बूल – पूगीफल – **ॐ नमस्त आयुधायानाततायै धृष्णवे।**
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, मुखवासार्थे सपूगीफलं ताम्बूलपत्रं समर्पयामि। (पान* इलायची, लौंग और सुपारी के साथ चढ़ायें।)

दक्षिणा – **ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः।**
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य-दक्षिणा समर्पित करें।)

आरती – **ॐ आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः।**
दिवः सदाꣳ सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, कर्पूरार्तिक्यदीपं दर्शयामि।
(कपूर की आरती* करें।)

भगवान् गङ्गाधर की आरती[1]

ॐ जय गङ्गाधर जय हर जय गिरिजाधीशा।

---

* फल, पान समर्पण तथा आरती के बारे में जानकारी के लिए 'देवपूजा-प्रकरण' नामक लेख देखें।

1. यहाँ पर सर्वाधिक प्रचलित आरती को दिया जा रहा है। यही आरती अनुष्ठानप्रकाशः (पृ. 182) में पार्थिव-लिंगपूजा के सन्दर्भ में दी गयी है। यही आरती पार्थिवपूजा के अवसर पर भी प्रयोग की जा सकती है। इस आरती के अलावा रुचि के अनुसार अन्य आरती भी हिन्दी या संस्कृत भाषा में प्रयोग की जा सकती है।

त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा ।। 1 ।। हर हर हर महादेव।।
कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।
गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने।।
कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता।
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता।। 2 ।। हर0।।
तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता।।
क्रीडा रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम्।। 3 ।। हर0।।
बिबुधबधू बहु नृत्यत हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता।।
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नाटयते।। 4 ।। हर0।।
रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां।।
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरुते।। 5।। हर0।।
कर्पूरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम्।।
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्।
डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम्।। 6।। हर0।।
मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम्।।
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्।। 7।। हर0
शङ्खनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते।।
अतिमृदुचरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा।। 8।। हर0।।
ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा।

रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा।।
संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते।। 9 ।। हर0।।

आरती के बाद जल गिरा दें। देवता को फूल चढ़ायें। फिर दोनों हाथों से आरती लेकर हाथ धो लें।

प्रदक्षिणा – **ॐ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।**
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा। (प्रदक्षिणा* करें)

पुष्पाञ्जलि – **ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।**
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

(मन्त्र – पुष्पाञ्जलि समर्पण करें, तदनन्तर साष्टाङ्ग प्रणाम और पूजनकर्म शिवार्पण करें।)

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः।।
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, प्रार्थनापूर्वकनमस्कारान् समर्पयामि। अनया पूजया श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम। श्रीसाम्ब – सदाशिवार्पणमस्तु।

इसके बाद भगवान् शंकर की विशेष उपासना की दृष्टि से पञ्चाक्षर – मन्त्र का जप, रुद्राभिषेक तथा बिल्वपत्र एवं कमलपुष्पों से सहस्रार्चन आदि किये जा सकते हैं। अन्त में संक्षेप में उत्तराङ्ग – पूजन कर आरती, पुष्पाञ्जलि एवं स्तुति करनी चाहिये। शिवरात्रि आदि पर्वों में बिल्व – पत्रादि से शिवार्चन तथा रात्रि – जागरण की विशेष महिमा है।

(यह लेख मुख्य रूप से गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित तथा श्रीरामभवनजी मिश्र तथा श्रीलाल बिहारी मिश्र द्वारा लिखित 'नित्यकर्म – पूजाप्रकाश' तथा वहीं से प्रकाशित कल्याण के 'शिवोपासनांक' तथा वीरमित्रोदयः पूजाप्रकाशः पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁

* प्रदक्षिणा के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए 'देवपूजा – प्रकरण' नामक लेख देखें।